विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत दिनांक 29-04-2021

वर्ग सप्तम शिक्षक -राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

प्रथमः पाठः

वार्तालापः

(लट् - लृट् - लकारयोः पुनरावृत्तिः)

संस्कृत में 'काल' को लकार कहते हैं एवं क्रिया के मूल रूप को 'धातु' कहते हैं। धातु के इन्हें मूल रूपों का प्रयोग हम लकारों में करते हैं। संस्कृत में पढ़ाए जाने वाले लकार हैं - लट् लकार (वर्तमान काल), लृट् लकार (भविष्यत्

काल), लङ् लकार (भूतकाल) लोट् लकार (आज्ञा/आदेश), विधिलिङ् (चाहिए के योग में)।

'लट् लकार' का प्रयोग वर्तमान काल के लिए किया जाता है तथा 'लृट् लकार' का प्रयोग भविष्यत् काल के लिए किया जाता है। निम्नलिखित उदाहरणों को देखिए -

लट् लकारः (वर्तमान काल)	**(लृट् लकारः)** (भविष्यत् काल)
सः पठति। तौ पठतः। ते पठन्ति।	सः पठिष्यति तौ पठिष्यतः। ते पठिष्यन्ति।
त्वं खादसि। युवां खादथः। यूयं खादथ।	त्वं खादिष्यसि।

	यूयं खादिष्यथ।
अहं क्रीडामि। आवां क्रीडावः। वयं क्रीडामः।	अहं क्रीडिष्यामि। आवां क्रीडिष्यावः। वयं क्रीडष्यामः।